International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणवाद : एक विचार एंव आंदोलन

लक्ष्मी कुमारी
(LAKSHMI KUMARI)
Research Scholar
Deptt. Of Pol. Sc.
B . N.M.U , MADHEPURA

पर्यावरणवाद : एक विचारधात्मक अरन्दोलन –पर्यावरणवाद एक विचारात्मक आंदोलन है जिसका उद्देष्य पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षित करना है, जिससे पृथ्वी पर जीवन सदैव बन रहे। इस आन्दोलन का पारम्भ 1970 में पष्चिमी दषों में हुआ था, जहाँ से यह पूरे विष्व में फैल गया। पर्यावरणवादी उन सभी गतिविधियों के विरूद्ध है जिनसे पर्यावरण को क्षति पहुँचती है। अतः यह संयुक्त राष्ट्रसंघ एवं राष्ट्रों की सारकारों से ऐसी समस्त गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए प्रयत्नरत् है। पर्यावरणवादियों को परिथितिकी विज्ञानवादी (Ecologist)भी कहा जाता है तथा उनके आंदोलन को हरित–राजनीति (Green Politics)कहा जाता है।

पर्यावरण का क्षय : एक विकट अन्तर्राष्ट्रीय समस्या :–पय्यावरण का क्षय अथवा ह्रास आज एक विकट अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का रूप ले चुकी है। जनसंख्या विस्फोट, नगरीकरण, जल प्रदूषण, धुआँ, षोरगुल, रासायनिक प्रवाह, विज्ञान और तकनीकी का अप्रत्याषित प्रसार इत्यादि वे कारण है जिनकी वजह से पय्यावरण को लगातार क्षति पहुँच रही है। निर्धनता और अज्ञानता के कारण आज भी विष्व के अधिकांष देषों में पर्यावरणवाद की समस्याएँ लगातार बढ़ती चली आ रही है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ : पर्यावरणवादी चिंताओं का प्रमुख पैरवीकार –

संयुक्त राष्ट्रसंघ के आरम्थिक दषकों में पर्यावरणवादी चिंताएँ यदा–कछा ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सूचित होती थीं। परंतु इस संगठन के तत्सम्बन्धी कार्यो ने प्राकृतिक संसाधनों की खोज एवं उपयोग पर जोर दिया। साथ ही यह भी सुनिचित करना चाहा कि खास तौर पर विकासषील देष अपने स्वयं के प्राकृतिक ससाधनों पर नियंत्रण बनाये रखने में समर्थ हों। संयुक्त राष्ट्रसंघ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणवाद कीचितओं के प्रमुख पैरवीकार रहा है। वर्ष 1972 में स्टॉकहोम संयुक्त राष्ट्रसंघ सम्मेलन में आर्थिक विकास

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

औरपर्यावरणवादी क्षय के बीच के संबंधों को प्रथम बार संयुक्त राष्ट्रसंघ के एजेण्डा में षामिल किया गया था। सम्मेलन के बा विभिन्न राष्ट्रों की सरकारो ने संयुक्त राष्ट्र पय्रावरण कार्यक्रम (United Nation Environment Programme-UNEP) यू दन ई पी को स्थापित किया जो एक प्रमुख वैष्विक पर्यावरणीय एजेन्सी के रूप में कार्य कर रहा है।

आज पर्यावरणवाद को समर्थन देने एवं उसे सुरक्षित करने की जरूरत सभी क्षेत्रों में महसूस की जा रही है।संयुक्त राष्ट्रसंघ के अपने पय्रावरणीय विवके के आधार पर गठित यू एन ई पी वियव की स्थिति का आंकलन करती है और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की जरूरत वाले विषयों की पहचान भी करती है। यह अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरणवादी कानून तैयार करने और संयुक्त राष्ट्र प्रधाली को समाजिक एवं आर्थिक नीतियों एवं कार्यक्रमों में पयावरणवादी विचारों को षामिल करने में सहायता करती है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणवाद की प्रमुख चिन्ताएँ

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणवाद संबंधी चिन्ताएँ बढ़ने के निम्नलिखित कारण है –

- **तपमान का बढ़ता सिलसिला**– पृथ्वी के तापमान को रिकार्ड करने का सिलसिला वष्र–1860 से प्रारम्भ हुआ। वर्त्तमान समय में प्रथ्वी पर जितनी उर्जा और गर्मी पैदा होरही है, वह अवषोषित नहीं हो पा रही है। इसका नतीजा यह है कि पृथ्वी गर्म होती जा रही है।
- **तपमान में वृद्धि से ओजोनपरत में छेद** –बढ़ता तापमान और ओजोन परत में छेद पृथ्वी के लिए दो अलग–अलग खतरे हैं जो आपस में जुड़े हुए है। गरम होती धरती औं ग्रीन हाउस प्रभाव का संबंध वातावरण की निचली सतह में गर्मी सोखने वाली गैस बढ़ती सघनता से है जबकि ओजोन परत का संबंध वातावरण की उपरी सतह से है। यह परत सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों को रोकती है जिनमें कुछ वनस्पति, पषुओं और मानवों के लिए नुकसानदेह है।
- **बढ़ता तापमान : एक चेतावनी** – पृथ्वी का तापमान जिस तेजी से बढ़ रहा है अगर उस पर समय रहते काबू नहीं किया गया तो अगली सदी में पृथ्वी का तापमान 60 डिगी सेल्सियस तक पहुँच जायेगा।आज जब 48 डिग्री सेल्सियस की गर्मी में इंसान तड़प उठता है तो 60 डिग्री सेल्सियस के कुप्रभाव की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।
- **पिघलती बर्फ : एक ज्वलंत विषय** –अगर पृथ्वी का तापमान इसी तरह बढ़ता रहा तो अटल होन के प्रतीक रहे ध्रुवीय हिमखंड, बर्फ के पहाड़ अतीत की बात बन जाऐंगे। हालात अगर ऐसे ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रहे तो हो सकता है वर्ष–2025 की गर्मियों के बाद आर्कटिक में बर्फ ढूंढ़ने से भी न मिले। आर्कटिक की मिलों मोटी बर्फ की चादर विराट हमिखंडों के षक्ल में चिथड़ा–चिथड़ा होकर समुद्र में समा रही है और उसके पिघलने से सालों –साल रत्ती–रत्ती चढ़ रहा समुद्र हाफलैंड और बंग्लादेष के निचले इलाकों को ही नहीं बल्कि लक्षद्वीप के भी अच्छे खासे भू–क्षेत्र को हजम करता जा रहा है।

- **ग्रीन हाउस गैस** – पुथी पूर्व औधेगिक समय से करीब 0º75 डिग्री सेल्सियस के अनुपात से गर्म हो रही है। पिछले 125 वर्षों में 1990 से 2005 में से 11 वर्ष इस दौरान सबसे गर्म वर्ष रहा है। इस पर एक आम सहमति रही है कि यह सब जीवाष्म ईंधन के जलने से उत्पन्न हुई कार्बन–डाई–ऑक्साईड जैसी ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ते उत्सर्जन ही धरती के गर्म होने के कारण हैं। प्रतिपष्र मानव जाति द्वारा कार्बन–डाई–ऑक्साईड का किया गया उत्सर्जन अन्तर्राष्ट्रीय उत्सर्जन का तिगुना होता है।
- **ध्रुवीय क्षेत्रों को खतरा** –जलवायु में हो रहे इस परिवर्त्न का सबसे प्रभाव ध्रुवीय क्षेत्रों में दिखाई देता है अन्तार्राष्ट्रीय अनुपात को देखते हुए उ7ारी ध्रुव दोहरी तेजी से गर्म हो रहा है। सदियों से बर्फ की मजबूत चादर में ढ़के क्षेत्र पिघल रहे हैं और ये जलवायु में हो रहे आकस्मिक परिवर्तन के कारण है, जिसके कारण उत्तरी ध्रव के समुद्र में फैली स्थायी बर्फ के मोटी परत पर कम हो रही है जिससे ध्रुवीय क्षेत्रों को बहुत क्षति पहुँच रही है।
- **समुद्र के जलस्तर मेंतेजी से वृद्धि**– जलवायु परिर्वतन के कारण तटों पर बसने वाले लोगों और समुद्र नर अपनी आजीवीका के लिए निर्भर लोगों के लिए पानीमें डुबने का खतरा पैदा हो गया है, क्योंकि पर्यावरण्न में हो रहे परिर्वतन के कारण समुद्र का जस्तर बढ़ने से कम ऊँचाई वाले द्वीपों और तटीय षहरो के डूबने का खतरा साल–दर–साल बढ़ता हीद जा रहा है।

  पिछले 200 वर्षों में करीब आधी कार्बन–डाई–ऑक्साईड को महासागर सोख चुके है जिससे कार्बनिक एसिड पैदा होने के कारण समुद्र जल के सतह का PH स्तर कम होता जा रहा है।
- **सिकुड़ता ग्लेशियर** –पृथ्वी का बर्फीला क्षेत्र जहाँ जीम रहती है, तेजी से पिघल रहा है जिसका सबसे बड़ा कारण ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन है। ग्लेषियर पिघलने के कुछ और प्रतिकूल

परिणाम भी अब इस प्रक्रिया को तेजी दे रहे हैं। गंगोत्री ग्लेषियर तेजी से सिकुडते ग्लेषियर का ही उदाहरण है।

जहरीले रसायनों के लिए ध्रुवीय क्षेत्र एक नैसर्गिक स्थान बन चुका है, जहाँ इन्हेंफेंका जाता है जिसके कारण वे वहाँ निवास करने वाले जीवों के जीवन पर ही नहीं अपितु पर्यावरण के लिए भी खतरा बन गए हैं। पिघलते ग्लेषियर का ड्रेकुला मुँह फाड़े मालदीव को निगलने के लिए लगातार बढ़ रहा है।

बढ़ते तापमान के दुष्परिणाम–पृथ्वी के पर्यावरण के बढ़ते तापमान से होने वाले दुष्परिणामों पर हम सहजता से यकीन नहीं कर पाते, पर ये सभी दुष्परिणाम दूरगामी होते है। वैज्ञानिकों के अनुसार अगर हम समय रहते नहीं चेते तो 21वीं सदी में ही हमारी आनेवाली पीढ़ियों को इन भविष्य के प्रलय का सामना करना पड़ सकता है। वर्त्तमान समय में बढ़ते तापमान के दुष्परिणाम दिखाई दे रहा है। जैसे वर्षाकाल के समय में परिर्वतन, असिमित वर्षा, मरूस्थलिकरण, गर्मीको ऋतु में अधिकतम तापमान का बढ़ना, षरद ऋतु के समयकाल में कमी, समय से पहले वनस्पतियों के फलना–फुलना, पक्षियों की आदतें में एवं समय में बदलाव इत्यादि।

निष्कर्ष :–अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरणवाद की समस्योंओं को बड़ा मंच 3 जून 1992 को ब्राजील की राजधानी रियो–डि–जेनरो में पर्यावरण एवं विकास पर आयोजित सम्मेलन के द्वारा संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव बुतरस–बुतरस घाली के नेतृत्व में मिला। यह सम्मेलन 1992 में स्टॉहोम में पर्यावरण में हुए संयुक्त राष्ट्र की20वीं वर्षगाठ के मौके पर हुआ था। स्टॉकहोम सम्मेलन के फलस्वरूप ही पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल विकास के सिद्धांतों राष्ट्र पर्यावरण काकार्यक्रम की नींव पड़ी जो आज एक ज्वलंत विषय बन चुका है।

1. अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्डै पर पर्यावरणीय मुद्दे; अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति;साहित्य भवन पब्लिकेषन्स;डॉ बी0 एल0 फाड़िया ; 2011

2. एन्ड्रेस चार्ल्स एफ0 पोलिटिकल लाइफ एण्ड सोषल चेंज; एन इन्ट्रोउक्षन टू पोलिटिकल साइन्स; कैलिफोर्निया वडर्सवर्थ पब्लिकषिंग कं0–1970

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

3. सिंह डॉ0 सुरेन्द्र प्रसाद; समकालीनराजनीतिक सिद्धान्त; नोवेल्टी एंड कंपनी अषोक राजपथ; पटना–800005

4. अर्चाना प्रसाद एन्वार्यमेंट डेवलमेंट एंड सोसाइटी इन कन्टेम्परेरी इंडिया; मैकमिलन नई दिल्ली।

5. एस. एन. पवार तथा आर बी. पाटिल; एन्वार्यमेंट मूवेंटष्स इन इंडिया; रवत पब्लिकेषन्स; नई दिल्ली।

5. प्रतियोगिता दपर्ण ;मासिक

6. हिन्दुस्तान, भागलपुर संस्करण।